PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 7, ISSUE 2

आर्थिक विकास में मानव संसाधनों की भूमिका

आत्म प्रकाश तिवारी
शोधार्थी अर्थशास्त्र विभाग,
सामाजिक विज्ञान संकाय,
मोहन लाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय,
उदयपुर **(राजस्थान) भारत**

डॉ वंदना वर्मा
सह–आचार्य,
अर्थशास्त्र
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय,
उदयपुर **(राजस्थान) भारत**

सारांश –

किसी देश के आर्थिक विकास में मानव संसाधनों की महत्वपर्ण भूमिका होती है। यद्यपि आर्थिक विकास में प्राकृतिक संसाधनों तथा पूंजी की मात्रा की विशेष भूमिका होती है, फिर भी ये आर्थिक विकास के निर्जीव साधन हैं। वास्तव में मानव ही वह शक्ति है जो इन संसाधनों की अपनी कार्यकुशलता तथा बौद्धिक क्षमता द्वारा वांछित दिशा में गतिशील कर इनका कुशलतम उपयोग करती है तथा विकास का मार्ग प्रशस्त करती है। कुछ विद्वानों की धारणा है कि आर्थिक विकास के लिए मानव संसाधन प्राकृतिक संसाधनों की अपेक्षा अधिक महत्वपूर्ण है।

मानव विकास सूचकांक से आशय विकास के लिए ऐसे वातावरण के निर्माण से है जिसमें लोग अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर उत्पादकता बढ़ा सकें एवं अपनी आवश्यकताओं एवं रूचियों के अनुरूप सृजनात्मक जीवनयापन कर सकें। इसलिए कहा भी जाता है कि व्यक्ति ही राष्ट्र की वास्तविक पूँजी होते है। मानव विकास लोगों के लिए अवसरों को बढ़ाकर उनकी स्वतन्त्रता और क्षमताओं के विस्तार के साथ मानवीय परिस्थितियों में सुधार कर जीवन को बेहतर करता है। मानव विकास का तात्पर्य यह भी है कि कैसे मानव अपने जीवन को समाजोपयोगी एवं मूल्यवान बनाकर अपनी क्षमताओं से स्वयं को राष्ट्र के लिए उपयोगी बना सकता है।

शब्द संकेत – आर्थिक विकास, मानव विकास सूचकांक, वास्तविक पूँजी

PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 7, ISSUE 2

परिचय –

किसी प्रदेश या राष्ट्र की जनता की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के योग को उस प्रदेश या राष्ट्र की मानवीय शक्ति या मानव संसाधन कहा जाता है। मानव संसाधन में किसी निश्चित इकाई क्षेत्र में रहने वाली मानव जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, संगठनात्मक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जैसी विशेषताएं सम्मिलित होती हैं। मानव स्वयं भी एक संसाधन है जो शारीरिक एवं मानसिक दोनों ही श्रम द्वारा आर्थिक क्रियाएं करता है। मानव प्राकृतिक तत्वों को अपने ज्ञान एवं कौशल द्वारा मूल्यवान संसाधन के रूप में तैयार करता है एवं स्वयं भी उपयोग करता है। अतः मानव संसाधनों का निर्माता एवं उपभोक्ता दोनों होता है।

मानव संसाधन विकास एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत जन शक्ति के विकास हेतु भारी मात्रा में पूंजी निवेष किया जाता है। जनसंख्या और संसाधनों के बीच सन्तुलन के किसी मूल्यांकन में जनसंख्या वृद्धि महत्वपर्ण तत्व बन जाता है। किन्तु हम इस तथ्य की उपेक्षा नहीं कर सकते हैं कि केवल उच्च जनसंख्या वृद्धि अथवा संसाधनों की कमी ही असन्तुलन के लिए उत्तरदायी है। सामाजिक संरचना, प्रौद्योगिक उन्नति की अवस्था, वितरण प्रणाली की वि"ोषताएं और सरकारी नीतियॉ आदि वे तत्व हैं जो मुनष्यों तथा संसाधनों के बीच सन्तुलन को प्रभावित करते है। यही कारण है कि विगत कुछ दशकों से विश्व के अधिकाशं देशों में होने वाले जनसंख्या के अध्ययनों में मानव संसाधन विकास तथा आर्थिक रूप से क्रियाशील जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं के अध्ययन में अभिरूचि बढ़ी है।

किसी देश का आर्थिक विकास उस देश में उपलब्ध मानव पूंजी के स्टॉक तथा संचय की दर पर निर्भर करता है। वर्ष 1991 के बाद से विकासशील देषों में नियोजित आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव संसाधनों के विकास पर समुचित ध्यान दिया जाने लगा है। यही कारण है कि इन देषों मे विकास के वांछित लक्ष्य नहीं प्राप्त हो पाते है तथा वहां विकास की दर निम्न रहती है। अतः विकास की प्रक्रिया में पूंजीगत साधनों–प्लांट तथा मषीनरी पर व्यय करने के साथ–साथ मानव पूंजी के विकास पर भी ध्यान दिया जाना चाहिए। आज अधिकांश विकासवादी अर्थशास्त्री इस बात के पक्षधर हैं कि मानव पूंजी में अधिक से अधिक विनियोग किया जाना चाहिए ताकि आर्थिक विकास के सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटक मानव संसाधन का समुचित विकास किया जा सके। भौतिक पूंजी को उत्पादक कार्यो में प्रयोग में लाने हेतु तथा उत्पादकता में वृद्धि हेतु मानवीय पूंजी की बड़ी आव"यकता होती है जिसका राजस्थान में सर्वथा अभाव पाया जाता है। इसके अभाव में उत्पादन के साधनो का अनुकूलतम उपयोग नहीं हो पाया है।

इनमें मानव निर्मित पूंजी का कु"ालतापूर्वक अनुकूलतम प्रयोग तभी सम्भव होता है जब मानवीय साधन पूर्ण कुषल, प्रषिक्षित, स्वस्थ एवं उत्साहपूर्ण हों। वास्तव में उत्पादन में पूर्णता मनुष्य से सम्बन्धित है। अन्य शब्दों में, उत्पादन अन्ततः भौतिक पदार्थो पर मानव क्रिया का ही परिणाम होता है। इस तरह आर्थिक विकास को गति प्रदान करने का श्रेय मनुष्य को ही है।

प्रो. आर्थर लुईस के अनुसार–''आर्थिक विकास मानवीय प्रयत्नों का परिणाम है।''

आर्थिक विकास मानव संसाधन के महत्व पर अपना मत व्यक्त करते हुए मायर ने कहा– ''विकास की कुँजी मनुष्य है और तीव्र गति से विकास के लिए मानवीय योग्यताओं, आदर्षों तथा दृष्टिकोणों में परिवर्तन वांछनीय है।'' चूंकि आर्थिक विकास पूर्णतया मानवीय संसाधनों पर निर्भर करता है, अतः मानवीय संसाधनों का विकास आर्थिक विकास की पूर्व आव''यकता समझी जायेगी। प्रसिद्ध अमेरिकी अर्थषास्त्री शुल्ज का कथन है कि ''हमारी आर्थिक प्रणाली का सबसे महत्वपर्ण पहलू मानव पूंजी का विकास है। ऐसा किए बिना हमें व्यापक दरिद्रता एवं कठोर शारीरिक श्रम से मुक्ति नहीं मिल सकती। पूंजी निर्माण से आषय, श्रमिकों की कार्यकुशलता में वृद्धि करना है। साइमन कुजनेट्स के अनुसार ''व्यापक अर्थ में मुख्य पूंजीगत स्टॉक लोगों का प्रषिक्षण चरित्र एवं कार्यकुषलता है।''

मानव पूंजी के महत्व को स्पष्ट करते हुए रिचर्ड टी गिल ने कहा है – ''आर्थिक विकास कोई यांत्रिक प्रक्रिया नहीं है और न ही वह विभिन्न साधनों को जोड़ने वाली सामान्य समस्या है। वह एक मानवीय उपक्रम है, और सभी मानवीय उपक्रमों की भांति इसके परिणाम अन्तिम रूप से उन लोगों की क्षमता, गुणों व दृष्टिकोणों पर निर्भर करते हैं जो कि उसे अपने हाथों में लेते है।''

आर्थिक विकास का सूचक :–

आर्थिक विकास आज के युग का एक बहुचर्चित विषय बन गया है और प्रत्येक राष्ट्र एक दूसरे के आगे बढ़ जाने के लिए प्रयत्नशील है। किन्तु प्रष्न यह है कि आर्थिक विकास का मापदण्ड क्या हो? अर्थात किसी देष का आर्थिक विकास हो रहा है या नहीं, इस बात के मापदण्ड के सम्बन्ध में अर्थषास्त्रियों में वाणिज्यवादियों से लेकर आधुनिक अर्थषास्त्रियों के विचार इस प्रकार है–

वाणिज्यिकवादियों के विचार :–

वाणिज्यिकवादियों के दृष्टिकोण में किसी भी देष में सोने व चांदी के कोष ही उस देष के आर्थिक विकास के मापक होते हैं। प्रो. एडम स्मिथ के अनुसार किसी भी देष की शक्ति का ज्ञान उस देष की उत्पादन शक्ति, श्रम की दशा, तकनीकी ज्ञान एवं विषिष्टीकरण की मात्रा में होता है। इस प्रकार प्रो. एडम स्मिथ ने वस्तुओं एवं सेवाओं के उत्पादन को ही आर्थिक विकास का मापदण्ड माना है और कार्लमार्क्स ने समाजवाद को आर्थिक विकास का मापदण्ड माना है।

आधुनिक अथंशास्त्रियों के विचार :–

आधुनिक अर्थशास्त्रियों ने आर्थिक विकास के लिये उत्पादन के साथ वितरण को भी महत्व दिया है। उनकी दृष्टि में आर्थिक विकास के लिये सभी आव''यक तत्वों का महत्वपूर्ण योगदान होता है। इन अर्थ''ाास्त्रियों ने आर्थिक विकास की माप हेतु निम्नलिखित मापदण्ड प्रस्तुत किया है –

राष्ट्रीय आयवृद्धि मापदण्ड– प्रो. मायर एवं वाल्डविन कुजनेट्स ने किसी दष की वास्तविक राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि को देश के आर्थिक विकास का सूचक माना है । इन अर्थषास्त्रियों का मत है कि प्रति व्यक्ति आय का मापदण्ड अपेक्षाकृत भ्रमात्मक है क्योकि इससे विकास की वास्तविक स्थिति की जानकारी नहीं हो पाती है। इस सम्बन्ध में निम्न तर्क दिये गये है–

प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि– चूंकि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के लिये वास्तविक राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना आव''यक है इसलिए मायर एवं बाल्डविन का मत है कि प्रति व्यक्ति आय के अपेक्षा राष्ट्रीय आय वृद्धि को आर्थिक विकास का सूचक मानना श्रेयस्कर होगा। आधुनिक युग में अधिकांष अर्थषास्त्रियों का मत है कि राष्ट्रीय आय आर्थिक विकास का सही मापदण्ड नहीं है बल्कि देष में प्रति व्यक्ति आय में होने वाली वृद्धि को उस देष की आर्थिक विकास का सूचक माना जाना चाहिए क्योंकि अविकसित देषों में मुख्य रूप से लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाने की आवष्यकता होती है और जीवन स्तर का प्रत्यक्ष सम्बन्ध प्रति व्यक्ति आय से होता है। अतः जीवन स्तर तथा आर्थिक कल्याण वृद्धि की दृष्टि से किसी देष का विकास तभी माना जायेगा जबकि उसके प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि हो रही हो। प्रति व्यक्ति आय के समर्थकों का यह तर्क है कि–

- आर्थिक विकास का मुख्य उद्देष्य अल्प–विकसित देषों के निवासियों का जीवन स्तर उँचा उठाना है। जीवन स्तर में यह वृद्धि तब तक सम्भव नहीं है जब तक कि उन लोगों की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि नहीं हो जाती है।
- उस देष के कुल उत्पादन में इस प्रकार वृद्धि हो जिससे प्रति व्यक्ति उत्पादन की बढ़ती हुई मात्रा के स्तर को ऊँचा उठा सकें ताकि लोगों के आर्थिक कल्याण में वृद्धि हो सके।

आर्थिक कल्याण /वृद्धि मापदण्ड– इस मापदण्ड के अन्तर्गत राष्ट्रीय आय तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के अतिरिक्त आर्थिक कल्याण व जीवन स्तर में वृद्धि को आर्थिक विकास की कसौटी माना जाता है। इस सम्बन्ध में ओकन एवं रिचर्डसन का विचार है कि यह आवष्यक नहीं कि राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि होने पर लोगों के जीवन स्तर में सुधार होगा। जीवनस्तर में वृद्धि मूलतः उपभोग के स्तर पर निर्भर करती है। अतः देष में बढ़ा हुआ उपभोग व जीवन स्तर ही आर्थिक विकास का अभिसूचक है। इस मापदण्ड में भी कुछ विरोधाभास परिलक्षित होता है जैसे–

- कल्याण के अन्तर्गत हम केवल यही नहीं देखते कि क्या और कितना उत्पादित किया गया है, बल्कि यह भी देखना होगा कि कैसे उत्पादित किया गया है। अतः यह सम्भव है कि उत्पादन बढ़ाने के लिए लोगों की सुख–सुविधाओं में कटौती की जाये या श्रम के घंटों में वृद्धि की जाये और जिससे आर्थिक कल्याण में कमी हो जाये।
- आर्थिक विकास के अभिसूचक के रूप में मुख्य विवाद राष्ट्रीय आय व प्रति व्यक्ति आय के मध्य है। चूंकि इन दोनों मापदण्डों के अपने–अपने गुण–दोष हैं अतः सभी प्रकार की अर्थव्यवस्था के लिए किसी एक ही मापदण्ड का चुनाव करना न तो सम्भव है और न ही उचित। हमारी राय में विकसित देषों के आर्थिक विकास का अभिसूचक राष्ट्रीय आय में वृद्धि को माना जाना चाहिए तथा अल्पविकसित देषों के आर्थिक विकास हेतु प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि को स्वीकार किया जाना चाहिए। अधिकांष अर्थषास्त्रियों ने प्रति व्यक्ति आय के मापदण्ड को स्वीकार किया है।

मानवीय विकास की अवधारणा एवं अभिसूचक :–

मानवीय विकास की अवधारणा की व्याख्या करते हुए यू.एन.डी.पी. की मानवीय विकास रिपोर्ट 1997 में उल्लेख किया गया है कि– ''यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जन सामान्य के विकल्पों का विस्तार किया जाता है और इनके द्वारा उनके कल्याण के उन्नत स्तर को प्राप्त किया जाता है। यही मानवीय विकास की धारणाा का मूल है। ऐसे सिद्धान्त न तो सीमाबद्ध होते हैं और न ही स्थैतिक। परन्तु विकास के स्तर को दृष्टि में न रखते हुए जनसामान्य के पास तीन विकल्प हैं। एक लम्बा और स्वस्थ जीवन व्यतीत करना, ज्ञान प्राप्त करना और अच्छा जीवन स्तर प्राप्त करने के लिए आव''यक संसाधनों तक अपनी पहुंच बढ़ाना। कई और विकल्प भी है जिन्हें बहुत से लोग महत्वपूर्ण मानते हैं। इनमें उल्लेखनीय है राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक स्वतंत्रता से सृजनात्मक और उत्पादक बनने के अवसर और स्वाभिमान एवं गारंटीकृत मानवीय अधिकारों का लाभ उठाना।

महबूब–उल–हक के मार्गदर्षन में 1990 में मानवीय विकास रिपोर्ट के प्रथम प्रकाषन के पष्चात मानवीय कल्याण के मापों का निर्माण करने और उन्हें और परिष्कृत करने के लिए प्रयास किए गए। तीन अभिसूचक विकसित किए गए हैं–

1. मानवीय विकास अभिसूचक।
2. लिंग–सम्बन्धित विकास सूचक।
3. मानवीय निर्धनता सूचक।

मानवीय विकास स्चक : मानवीय विकास सूचक विकास के तीन मूल आयामों की औसत उपलब्धि है

1. एक लम्बे और स्वस्थ जीवन के माप के लिए जन्म पर जीवन प्रत्याषा।
2. ज्ञान जिसके माप के लिए बालिग साक्षरता दर और समग्र प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक कुल नामांकन अनुपात को आंका जाता है।
3. एक अच्छा जीवन स्तर जिसका माप है प्रति व्यक्ति सकल देषीय उत्पाद – यू.एस. डालर क्रय शक्ति समता।

मानवीय विकास सूचक का परिकलन करने से पूर्व इन तीनों आयामों के अलग अलग सूचक तैयार किये जाते हैं। इस उद्देष्य के लिए अधिकतम एवं न्यूनतम मूल्यों का प्रत्येक सूचक के लिए चुनाव किया जाता है–

तालिका – 1

मानवीय विकास के परिकलन के लिए अधिकतम और न्यूनतम मूल्य

सूचक	अधिकतम मूल्य	न्यूनतम मूल्य
जन्म पर जीवन प्रत्याशा	85	25
बालिग साक्षरता दर	100	0
कुल नामांकन अनुपात	100	0
प्रति व्यक्ति सकल देशीय उत्पाद – यू.एस.डालर क्रय शक्ति समता	40000	100

प्रत्येक आयाम के निष्पादन को 0 और 1 के बीच मूल्य के रूप में इस फार्मूले के प्रयोग से प्राप्त किया जाता है–

मानवीय विकास सूचक इन तीनों आयाम सूचकों की साधारण औसत है।

लिंग–सम्बन्धित विकास सूचक :– जबकि मानवीय विकास सूचक औसत उपलब्धि का माप है, लिंग सम्बन्धित विकास सूचक इस औसत उपलब्धि में पुरूषों एवं स्त्रियों में असमानता को दर्षाता है। जिन तीन आयामों का प्रयोग इसके लिए किया जाता है, वे हैं–

1. स्त्रियों में जन्म पर जीवन–प्रत्याशा
2. स्त्री बालिग साक्षरता एवं कुल नामांकन अनुपात
3. स्त्री प्रति व्यक्ति आय

यदि लिंग असमानता विद्यमान न हो, तो मानवीय विकास सूचक और लिंग सम्बन्धित विकास सूचक बराबर होगें। यदि लिंग असमानता विद्यमान है तो लिंग सम्बन्धित विकास सूचक मानवीय विकास सूचक से कम होगा। इन दोनों में जितना अधिक अन्तर होगा उतनी ही अधिक लिंग असमानता होगी। किन्तु यह कहना उचित होगा कि प्रदेष में अब लिंग असमानता को कम करने के लिए स्त्रियों की षिक्षा और परिवार में उनको बहेतर स्थान उपलब्ध कराने के लिए प्रयास चल रहे हैं। कुछ देष तो स्त्रियों के प्रति सांस्कृतिक पूर्वाग्रह होने के कारण पिछड़ गए है किन्तु उनमें भी नारी आन्दोलन द्वारा लिंग असमानता लाने के लक्ष्य को प्रोन्नत किया जा रहा है।

मानव निर्धनता सूचक– मानवीय विकास रिपोर्ट 1991 में मानवीय निर्धनता सूचक की अवधारणा को विकसित किया जो मानवीय जीवन के तीन अनिवार्य अंगों में वचन पर ध्यान संकेन्द्रित करती है जो कि मानवीय विकास सूचक में परिलक्षित है। दीर्घ आयु, ज्ञान और एक अच्छा जीवन स्तर। सबसे पहला वचन सापेक्षतः कम आयु में मृत्यु सम्बन्धी दुर्बलता है और इस सूचक में इसका संकेत 40 वर्ष की आयु से पूर्व मृत्यु प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के प्रतिषत से प्राप्त होता है। दूसरा वचन ज्ञान से जुड़ा है और इसका प्रमाण बालिगों में असाक्षरों के प्रतिषत से प्राप्त किया जाता है। तीसरा वचन अच्छे जीवन–स्तर से सम्बन्धित है। यह तीन चलों का संग्रहित है जन सामान्य का प्रतिषत जिसमें

1. स्वास्थ्य सेवायें
2. सुरक्षित पानी
3. पांच वर्ष से कम आयु वाले कुपोषित बच्चो का प्रतिषत।

यह जानना महत्वपूर्ण होगा कि मानवीय निर्धनता सूचक में आय का समावेष क्यो नहीं है। मानवीय विकास रिपोर्ट 1991 के अनुसार आर्थिक साधन जुटाने की व्यवस्था के पीछे तर्क यह है कि मानवीय निर्धनता सूचक में सकल राष्ट्रीय उत्पाद का समावेष वस्तुतः सरकारी एवं गैर–सरकारी सुविधाओ का समिश्रण है, चूंकि सार्वजनिक सेवाओं का भुगतान कुल राष्ट्रीय आय में से किया जाता है। आय निर्धनता का अनुमान लगाने के बारे में एक मुख्य समस्या यह हैं कि विभिन्न देषों के लिए उसी निर्धनता–रेखा का प्रयोग बहुत गुमराह करने वाला हो सकता हैं क्योंकि प्रत्येक देष में ''आवष्यक वस्तुओं में भिन्नता

पायी जाती हैं। किसी देश में वर्तमान उपभोग ढांचे के आधार पर वस्त्र, मकान और संचार एवं प्रसार–क्रिया के साधन जैसे–रेडियो और टेलिफोन आदि बहुत सी वस्तुएं एक सम्प्रदाय में सामाजिक सहयोग के लिए अनिवार्य समझी जा सकती हैं, जबकि अन्य सम्प्रदायों में इन्हें ऐसा नहीं माना जाता। परिणामतः सामाजिक अलगाव से बचने के लिए न्यूनतम आय भिन्न–भिन्न सम्प्रदायों में भिन्न–भिन्न हो सकती है। इसी कारण मानवीय निर्धनता सूचक में बच्चों के कुपोषण की विद्यमानता का प्रयोग किया गया जिसका माप सापेक्षतः आसान है और जिसके आंकड़े भी आसानी से उपलब्ध हो सकते हैं। इनके साथ स्वास्थ्य सेवाओं और सुरक्षित पानी की पहुंच को जोड़ लिया गया। इन तीनों को जोड़कर मानवीय निर्धनता की पर्याप्त और मोटे रूप में सही तस्वीर बनाना उचित समझा गया।

निष्कर्ष – मानव संसाधन अथवा आर्थिक रूप से क्रियाशील जनसंख्या की राज्य में सामाजिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक उत्थान में महत्वपूर्ण भूमिका होती है। मानव शक्ति का आकार तथा उसका गुणात्मक स्वरूप राज्य के विकास की दिशा एवं विकास का मार्ग निर्धारित करती है। मानव ही उत्पादन का साधन बनकर आर्थिक विकास को गति प्रदान करता है। यही कारण है कि वास्तव में उत्पादन में पूर्णता मनुष्य से ही सम्बन्धित है। अन्य शब्दों में, उत्पादन अन्ततः भौतिक पदार्थो पर मानव क्रिया का ही परिणाम होता है। इस तरह आर्थिक विकास को गति प्रदान करने का श्रेय मनुष्य को ही है।

सन्दर्भ सूची –

1 डॉ. वी. कुमार : ऑर्थर लुईस की परिभाषा, जनांकिकी, साहित्य भवन पब्लिषर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स (प्रा.लि.), आगरा।
2 डॉ. वी.सी. सिन्हा : आर्थिक समृद्धि और विकास, मयूर पेपरबैक्स ए 95 सेक्टर 5, नौएडा।
3 अग्रवाल आर.एन. : पापुलेषन, नेषनल बुक ट्रस्ट ऑफ इण्डिया, न्यू देलही।
4 अग्रवाल, ए.एन., ''भारतीय अर्थव्यवस्था विकास एवं नियोजन'', 2016, न्यू ऐज इन्टरनेषनल प्रा. लि. पब्लिषर्स, दिल्ली ।
5 मिश्रा, एस.के. एवं वी.के. पुरी, ''भारत का आर्थिक विकास और नियोजन'', 2017, हिमालया पब्लिषिंग हाउस, मुम्बई।